International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 138-139

# विद्यापति का वैभव

**डॉ0 जयराम त्रिपाठी**

सहा0 प्रोफेसर (हिन्दी), हेमवती नंदन बहु0 राज0 स्नातको0 महा0 नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

**सारांश**

हिन्दी के अन्य अनेक मूर्धन्य महाकवियों की परिपाटी का अनुसरण करते हुए विद्यापति ने भी अपने जीवन परिचय से संबंधित कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं दिया है। यह माना जाता है कि इनका जन्म सन् 1360 के आसपास हुआ होगा क्योंकि इनके पिता गणपति ठाकुर राजा गणेश्वर के सभासद थे। उन्हीं के समय से इनके जन्म का तारतम्य स्थापित किया जाता है। विद्यापति का रचनाकाल आदिकाल एवं भक्तिकाल के संधिकाल में आता है। उनका जन्म एक संपन्न मैथिल ब्रह्मण परिवार में हुआ था। और यह परंपरागत रुप से विद्वान परिवार था। इनका अधिकांश जीवनकाल राज्याश्रय में ही व्यतीत हुआ। राजा महाराजाओं के आश्रय में जो भी काव्य रचना हुई उसकी मुख्य प्रवृत्ति श्रृंगार और वीर रस की थी।

**मुल शब्दः** विद्यापति, भक्ति, श्रृंगार एवं लोकचेतना

**प्रस्तावना**

विद्यापति ने संस्कृत मैथिल और अवहट्ट भाषा में विविध रचनाएँ की, इनमें से मुख्य है, प्रमाण भूत पुराण संग्रह, पुरुष परीक्षा, दुर्गाभक्ति तरंगिणी, दान वाक्यावली, गंगा वाक्यावली, गया पत्तलक, लिखनावली, शैवसर्वस्व सार, कीर्तिलता कीर्तिपताका और पदावली। इनमें से विद्यापति की प्रसिद्धि का आधार पदावली है। पदावली का ग्रियर्सन, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि ने गंभीर अध्ययन कर अपने विचार व्यक्त किये हैं। पदावली पर विचार करते हुए विजयेन्द्र स्नातक ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं, ''मैथिली में लिखित विद्यापति पदावली की भाषा...........इसका वर्ण्य विषय राधा तथा अन्य गोपियों के साथ श्रीकृष्ण की प्रेमलीला। राधा और कृष्ण के प्रेम प्रसंगों को यह पुस्तक प्रथम बार उत्तर भारत में गेय पदों में प्रस्तुत करती है।''[1]

विद्यापति का वर्ण्य विषय अत्यन्त विवादास्पद रहा है, इनकी कविताएँ राधा कृष्ण की प्रेम लीला की कविताएँ हैं इसीलिए कालान्तर में आलोचकों के मध्य यह विवाद उत्पन्न हो गया कि यह कविता भक्ति के अंतरगत आयेगी अथवा श्रृंगार के अंतर्गत। यदि हम विद्यापति को कवि मानकर उनकी कविता का विश्लेषण करते हैं तो यह पाते हैं कि उन्होनें राधा–कृष्ण के प्रेम का अत्यन्त मांसल वर्णन किया है। श्रृंगार रस की अनेक चेष्टाएँ, भंगिमाएँ इनकी कविता में दिखाई पड़ती है। एक और संदेह इनके इष्ट संप्रदाय का भी है क्योंकि इन्होंने शैव एवं वैष्णव दोनों परिपारियों की रचनाएँ प्रस्तुत की हैं।

विद्यापति को भक्तिकाल के स्थान पर लोग रीतिकाल का कवि मानते हुए इसका कारण यह है कि जिस भागवत धर्म के प्रचार–प्रसार के परिणामस्वरुप भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ उसे ही हिन्दी साहित्य में इतिहास से भक्तिकाल के नाम से जाना गया इस काल के प्रतिभाशाली कवियो ने भगवद् भक्ति के माध्यम से जन समाज को एक प्रेरणा और धैर्य प्रदान किया है। भक्तिकाल के कवियों का वर्णन लोकमंगल की भावना से ओत प्रोत है। अनेक विद्वानों ने विद्यापति को कृष्ण भक्ति शाखा के प्रथम कवि के रुप में प्रतिष्ठित किया है। भक्ति काल के पश्चात् रीतिकाल प्रारंभ होता है जिसमें लक्षण ग्रंथों की रचना हुई और इस काल की मुख्य प्रवृत्ति श्रृंगार है। इस काल में श्रृंगार रस के परिपाक हेतु कवियों ने नायक–नायिका भेद, उद्दीपन सामग्री भाव–अनुभावों के विविध रुपों संचारी के रुप एवं संयोग श्रृंगार का विविध चित्रण किया है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में इस पर विचार करते हुए लिखा है–''विद्यापति के पद अधिकतर श्रृंगार के ही हैं, जिनमें नायक और नायिका राधा–कृष्ण हैं। इन पदों की रचना जयदेव के गीतकाव्य के अनुकरण पर ही शायद की गई हो। इनका माधुर्य अद्भुत है। विद्यापति शैव थे। इन्होनें इन पदों की रचना श्रृंगार काव्य की दृष्टि से की है भक्त के रुप में नहीं।''[2]

इस प्रकार आचार्य शुक्ल उन्हें रीतिकाल की परंपरा में स्थापित कर देते हैं। जितनी भी कवितायें राधा–कृष्ण को लेकर रची गई हैं अधिकांश श्रृंगारिक हैं और उनमें मांसल सौंदर्य का वर्णन किया गया है। विद्यापति की जितनी भी रचनाएँ राधा–कृष्ण को पात्र बनाकर रची गई है वे श्रृंगार रस की है और यह प्रतीत होता है कि इन्होनें अन्योक्ति रुप में मिथिला वासियों के जीवन का चित्रण किया है। उनके चित्रण से यह भी प्रतीत होता है कि वे मैथिल जनों के आहार विहार के अनुकूल श्रृंगारिक परिवेश का सृजन कर रहे हैं। इस प्रकार के वर्णनों के गहन अध्ययन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि मैथिल कोकिल विद्यापति कवि हैं और श्रृंगार के कवि हैं उनकी कविता की प्रवृत्ति उन्हें भक्तिकाल की तुलना में रीतिकाल के अधिक निकट स्थापित करती है। उनकी कविता में श्रृंगार रस की सभी प्रक्रियाओं का अनुसरण हुआ है और यह पुष्ट हो जाता है कि उन्हें कामशास्त्र का भी वृहद् ज्ञान था। विद्यापति संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वान थे, इसके बावजूद उन्होनें अपनी कविता को जन–जन तक सुलभ बनाने हेतु 'देसिल बयना' अर्थात् लोक भाषा मैथिली में लिखा आचार्य केशव की तरह उनके मन में लोक भाषा में कविता लिखने पर किसी तरह की हीन भावना नहीं थी। तुलसी की तरह ही इन्होनें लोक से जुड़कर उसके मनोहारी चित्र उपस्थित किये। साथ ही यह भी दिखाई पड़ता है कि विद्यापति पुरातन विचारों के स्थान पर नवीन उद्भावनाओं को महत्व देते हैं–

''नव वृन्दावन, नव नव तरुगन,
नव नव विकसित फूल।
नवल बसन्त, नवल मलयानिल
मातल नव अलि कूल।।''

विद्यापति के लेखन पर विचार करते हुए विदुषी लालसा यादव ने लिखा है, ''विद्यापति की काव्य भाषा में नारी के सौंदर्य को स्थापित करने के लिए शब्दों का खजाना भरा पड़ा है, लज्जा सौंदर्य का आभूषण है। लज्जा से पनप कर ही सौंदर्य गौरवमय और महिमाशाली बनता है। लज्जा मतवाली सुन्दरता का नूपुर है। विद्यापति ने नारी के भीतरी सौंदर्य लल्जा का चित्रण करके काव्य भाषा को सुन्दरता प्रदान की है।[3]

विद्यापति को दरबारी कवि अथवा चारण सिद्ध करने वाले यह सिद्ध करने का प्रयास करते रहे कि विद्यापति कवि या महाकवि न होकर चारण थे और उनका लोक के साथ कोई सरोकार नहीं था। जबकि देश काल के अनुरूप विद्यापति दरबारी कवि थे तो उन पर यह आरोप गलत है कि उनकी जनता के साथ किसी प्रकार की सहानुभूति नहीं थी और न वो जन सामान्य की भावनाओं से परिचित थे।

''विद्यापति जैसे दरबारी कवि ने विरहिणी नायिका के दुःख का चित्रण करते वक्त उसे रानी या राजकुमारी की भूमिका में नहीं रखा है, जो उनके लिए ज्यादा उचित और उस वातावरण के अनुकूल होता है।''[4] विद्यापति पर शिवप्रसाद सिंह के उपर्युक्त विचार उनके लोक कवि होने के प्रमाण है। संयोग और वियोग शृंगार के वर्णन के क्रम में विद्यापति ने प्रकृति का वर्णन उद्दीपन विभाव के अंतर्गत किया है परन्तु शृंगार के वर्णन में ऋतुराज वसंत आदि का वर्णन आलम्बन रूप में भी हुआ है। शृंगारी कवि होने के नाते वसंत और वर्षा ऋतु उन्हें अत्यन्त प्रिय है इसके वर्णन से अनुभूति में गहनता भी आती है और मिथिला की प्राकृतिक सुंदरता भी उन्हें काव्य रचना में प्रवृत्त कर रही थी। इनके प्रकृति वर्णन पर विचार करते हुए रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखा है–

''विद्यापति का वसंत और पावस काल का वर्णन पढ़कर मंत्रमुग्ध हो जाना पड़ता है। इनके वंसत और पावस में मिथिला की खास छाप है। वंसत के समय में मिथिला की शस्य श्यामला मही जिस प्रकार अलंकृत और आभूषित हो जाती है, वह दर्शनीय है। पावस में हिमालय निकट होने के कारण यहाँ बिजलियाँ बड़ी जोर से कड़कती हैं, प्रायः कुलिशपात होता है। विद्यापति ने इसका बड़ा ही अपूर्व वर्णन किया है।''[5]

विद्यापति के समग्र लेखन के महत्व पर विचार हुए हम यह देखते हैं कि गीत काव्य की परम्परा में उनका स्थान बहुत ऊँचा है उनके पद गाते हुए चैतन्य विभोर हो जाते थे और इन गेय पदों की महत्ता के कारण ही इन्हें 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से अलंकृत किया जाता है। यदि आप हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हैं तो आप 'मैथिल कोकिल' विद्यापति की कविता से गंभीर रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची


1. विजयेन्द्र स्नातक : हिंदी साहित्य का इतिहास (साहित्य अकादमी–2009), पृष्ठ–26
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास (नागरी प्रचारिणी सभा–काशी–1999), पृष्ठ–32
3. डॉ0 लालसा यादव : अनुसंधान, 2004–05 (हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद) पृष्ठ–145–46
4. डॉ0 शिव प्रसाद सिंह : विद्यापति (लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–2014) पृष्ठ– 179
5. रामवृक्ष बेनीपुरी : विद्यापति पदावली (लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–2003) पृष्ठ– 33